राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

राष्ट्रीय सहारा
sunday उमंग
रविवार 21 जुलाई • 2013

अध्यात्म

■ डॉ. एन. के. शर्मा

पहचानें अपनी शक्तियां

जब तक हमारे भीतर किसी तरह की अज्ञानता, भय और गलत जीवन की आदतें जारी रहेंगी, छद्म पंडित, पुरोहित, मौलवी, तांत्रिक, ज्योतिषी, साधु जैसे वर्ग और प्रबल होते जाएंगे। हम अपनी कमजोरी के मूल कारण (अज्ञानता, भय) को ठीक करने के बजाय लुटते चले जाते हैं। हम इनके पोषक हैं। जब हम प्रकृति के नियमों को, सूक्ष्म तरंगों के विज्ञान को ईश्वर प्रदत्त, अद्भुत, चमत्कारिक, आंतरिक, परामानसिक शक्तियों को जान लेते हैं तो हम सभी प्रकार की अज्ञानता से मुक्त हो जाते हैं। फिर हम अपनी जीवनी शक्ति एवं आभामंडल को सही, सकारात्मक आहार-विहार, विचार, खान-पान, ईश्वर पर अटूट विश्वास जैसी चीजों से सशक्त करते हैं। इससे हमारा आभामंडल विस्तृत होकर इतना प्रबल हो जाता है कि नकारात्मक ऊर्जाएं- चाहे वे तांत्रिक शक्तियां हों, श्राप या बद्दुआएं हो या फिर ग्रहों का प्रभाव हो- आपका बाल भी बांका नहीं कर सकते। यहां तक कि टीवी, कम्प्यूटर के हानिकारक विकिरण भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। जो तांत्रिक शक्तियों से प्रभावित होने को तैयार हैं, तांत्रिक उनका सबकुछ बिगाड़ सकते हैं और जिन्होंने अपनी भीतर ठान लिया है कि तांत्रिक उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते तो दुनिया का खतरनाक से खतरनाक तांत्रिक उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता, चाहे उसके पास कितनी ही खतरनाक शक्तियां हो। आपकी निर्भयता, आपका स्वयं पर और परमात्मा पर अटूट विश्वास, आपका सात्विक आहार-विहार एवं जीवन आपके अचूक सुरक्षा कवच है।

जिस तरह सकारात्मक तंत्र साधनाएं होती हैं वैसे ही नकारात्मक तांत्रिक साधनाएं भी होती हैं। दोनों अपने आपमें महाशक्तियां हैं। सकारात्मक साधनाओं के लिए विशेष प्रयास नहीं करने पड़ते क्योंकि वे आपके भीतर प्रकृतया उपलब्ध हैं, सहज हैं। एक बालक भी इनका उपयोग कर सकता है, अनपढ़ भी इनका उपयोग कर सकता है, परंतु नकारात्मक तांत्रिक शक्तियों के लिये विशेष साधनाएं करनी पड़ती हैं क्योंकि वे प्रकृति के विपरीत हैं। किंतु सकारात्मक ऊर्जाएं अपने आपमें इतनी शक्तिशाली और प्रबल होती हैं कि नकारात्मक ऊर्जाओं को अपना प्रभाव दिखाने के लिए इनसे भी अधिक शक्तिशाली होना पड़ता है। इसलिए तांत्रिकों को गहन साधना का सहारा लेना पड़ता है, अपनी आत्मा को, मन को, विचारों को, खान-पान को विकृत करना पड़ता है। इससे हिंसा, घृणा और क्रोध जैसी शक्तियां प्रबल हो जाती हैं।

भारत में ऐसे [illegible] नकारात्मक तांत्रिक 2 प्रतिशत भी नहीं है। विश्व के 98 प्रतिशत तांत्रिक खोखले, ढोंगी, चालाक और धूर्त किस्म के लोग हैं। इनके हाथों में आपके भय, आपकी कमजोरियों की नब्ज आ चुकी है। धन, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व कमाने का यह एक बहुत आसान जरिया हो गया है। 2-4 किताबें पढ़कर, अजीबोगरीब यंत्र बनाकर, कहीं से कुछ हड्डियां और खोपड़ियां खरीद कर, लाल और काले कपड़े का लंबा-चौड़ा गाउन पहन कर, थोड़े बाल और दाढ़ी बढ़ा कर, डरावना और रहस्यमय बन कर कोई भी तांत्रिक बन जाएगा। पूरे भारत में ऐसे ही धूर्त और झूठे तांत्रिक हैं। हमारे भय और कमजोरियों ने समाज के भीतर एड्स से भी अधिक खतरनाक इन परजीवधारियों को जीवित रखा हुआ है। ये लोग दावा करते हैं कि इनके पास मारक शक्तियां हैं। इनके दावों से न तो कोई आज तक मरा है और न कोई मरने वाला है। हां, आप डर के मारे जरूर मर सकते हैं।

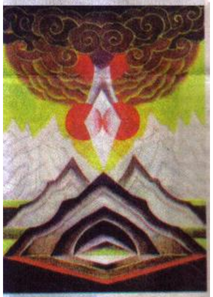

जब तक आप अज्ञानता में जीते रहेंगे, जब तक अपनी ही चमत्कारिक शक्तियों से अनजान रहेंगे, तब तक तथाकथित पंडितों, तांत्रिकों के हाथों लुटते रहेंगे। अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानो और बचा लो खुद को सदियों से चल रहे इस धोखे और पाखंड से और बन जाओ अपने जीवन के मालिक

जब तक आप अज्ञानता में जीते रहेंगे, तब तक अपनी ही चमत्कारिक शक्तियों से अनजान रहेंगे। तब तक तथाकथित पंडितों और तांत्रिकों के हाथों लुटते रहेंगे। अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानो और बचा लो, अपने आपको सदियों से चल रहे इस धोखे और पाखंड से और बन जाओ अपने जीवन के मालिक।

(लेखक रेकी हीलिंग फाउंडेशन, दिल्ली के संस्थापक हैं)

■